हमारा दिवस—महिला दिवस

जिंदाबाद बहनों! अपना दिन आ गया है। हर साल की तरह हम मिल-जुल कर अपनी आवाज उठा रही हैं—यौन-हिंसा, परिवार-कोर्ट की भूमिका, महंगाई, काम व मज़दूरी तथा सरकार की नीतियों पर!

हम जुलूस निकालेंगी, सभा करेंगी, नुक्कड़ नाटक करेंगी।

धाड़ क्षेत्र महिला मोर्चा, सहारनपुर की हिंदू, मुसलमान, इसाई, सब बहनों ने मिलकर महिला दिवस मनाया।

सभा में चर्चा हुई—धर्म से हम क्या समझते हैं। अपने अंदर झांकें।

धर्म के नाम पर हमें दबाया जाता है। (शाह बानो केस)

महिला आंदोलन व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोनों पहलुओं से जुड़ा है।

भजन, प्रार्थना और नृत्य हुए।

दर्पण संस्थान, गांव किरांव

महिलाओं की साप्ताहिक पंचायतों में लिए गए निर्णयों के अनुसार तहसील मुख्यालय घाटमपुर में महिला दिवस मनाया गया। अलग-अलग गांवों से ट्रैक्टरों में सवार होकर रुकते रुकाते, मौज मनाते दोपहर तक महिलाएं घाटमपुर पहुंचीं।

लगभग 200 महिलाओं और 50 बच्चों ने भाग लिया। ढोलक मजीरे के साथ जागरण गीत गाए गए, नुक्कड़ नाटक हुए व भाषण दिए गए। गांव किरांव, कमंडलपुर,

मुस्तफाबाद, रामपुर, दौलतपुर तथा सुजानपुरा में 2-3 दिन पहले से ही महिला दिवस की तैयारियां शुरू हो गई थीं

सदियों से हम सह रही हैं
और न सह पाएंगी।
ठान ली है अब लड़ने की
गर लड़कर ही जी पाएंगी
अब बना पर्दों का परचम
हर जगह लहराएंगी।
हम यहां इंसानियत का,
राज जल्दी लाएंगी।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च के दिन गगनभेदी नारों के साथ सहारनपुर शहर के मुख्य बाज़ार से गुजरता हुआ महिलाओं का विशाल जुलूस सबके लिए अचरज की बात थी। सब अचरज से देख रहे थे क्योंकि इससे पहले शहर में महिलाओं को इस तरह से नारे लगाते हुए पहले कभी नहीं देखा गया था।

है 8 मार्च का नारा
साल का हर दिन हो हमारा
भाषण नहीं हमें राशन चाहिए
दान नहीं हमें रोज़ी चाहिए।

गरीब हमारी जिंदगी,
हम मेहनतकश मज़दूर
मेहनतकश मज़दूर
क्यों हम इतने मजबूर।

सुहास कुमार

□